स्मृति संकल्प यात्रा के तहत देश के विभिन्न हिस्सों में अभियान, सांस्कृतिक कार्यक्रम, नुक्कड़ सभाएँ...

पिछले वर्ष 23 मार्च को भगतसिंह और उनके साथियों के 75 शहादत वर्ष के आरम्भ पर शुरू की गई स्मृति संकल्प यात्रा के तहत देश के विभिन्न क्रान्तिकारी संगठन पिछले डेढ़ वर्षों से भगतसिंह के उस सन्देश पर अमल कर रहे हैं जो उन्होंने जेल की कालकोठरी से नौजवानों को दिया था; कि छात्रों और नौजवानों को ज़रूरत है कि वे क्रान्ति की अलख लेकर गाँव-गाँव, कारखाना-कारखाना, शहर-शहर, गन्दी झोपड़ियों तक जाना होगा। इस अभियान के दौरान इन जनसंगठनों ने जो भी जनकार्रवाइयाँ की हम उसका एक संक्षिप्त ब्यौरा यहाँ दे रहे हैं। जिन इलाकों में अभियान की टोलियों ने मुहिम चलाई उनमें उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद, लखनऊ, गोरखपुर, वाराणसी, कानपुर, नोएडा, ग़ाज़ियाबाद, हापुड़; उत्तरांचल में रुद्रपुर, ऊधमसिंहनगर, हल्द्वानी; पंजाब में जालंधर, लुधियाना आदि जैसे शहर और साथ ही पूरा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र भी शामिल है। इनमें से कुछ स्थानों की अभियान सम्बन्धी रिपोर्टें हम यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं। — सम्पादक

दिल्ली व आस-पास के क्षेत्रों में सघन अभियान व सांस्कृतिक कार्यक्रम

शहीदे आज़म भगतसिंह के 75वें शहादत वर्ष (23 मार्च 2005) से आरम्भ हुई स्मृति-संकल्प यात्रा के तहत विभिन्न जनसंगठनों द्वारा जगह-जगह पर सांस्कृतिक कार्यक्रम किये गये, ट्रेनों, बसों, नुक्कड़ चौराहों व घर-घर में घनीभूत जनसम्पर्क अभियान चलाया गया।

इस अभियान के तहत दिशा छात्र संगठन की सांस्कृतिक टोली 'विहान' ने दिल्ली विश्वविद्यालय के परिसर में विभिन्न स्थानों पर क्रान्तिकारी गीतों के कन्सर्ट और क्रान्तिकारी नाटकों की नुक्कड़ प्रस्तुतियाँ कीं। इसी अभियान के तहत कला संकाय के ओपेन एयर थियेटर में 14 दिसम्बर को संगीत कन्सर्ट और नुक्कड़ नाटकों की प्रस्तुति की। इस कार्यक्रम को छात्रों-छात्राओं द्वारा काफी सराहा गया। कई छात्रों ने भगतसिंह के विचारों को इस रचनात्मक तरीके से जन-जन तक पहुँचाने के अभियान से जुड़ने की इच्छा भी जाहिर की। इसके बाद 'विहान' की टोली ने 13 जनवरी की रात को शिक्षा संकाय में संगीत कन्सर्ट का आयोजन किया जिसमें फ़ैज़, मुक्तिबोध, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जैसे कवियों की कविताओं की सांगीतिक प्रस्तुति की गई और साथ ही बॉब डिलन और जॉन लेनन के गीतों की भी प्रस्तुति की गई। यहाँ भी छात्रों ने कार्यक्रम को काफी सराहा और भरपूर सहयोग किया।

नौजवान भारत सभा और दिशा छात्र संगठन ने मुकुन्द विहार में दो दिन (18-19 दिसम्बर) का निशुल्क मेडिकल कैम्प का आयोजन किया जिसमें 700 लोगों की जाँच की गई। इसी कैम्प में पोस्टर प्रदर्शनी का भी आयोजन हुआ। स्मृति संकल्प यात्रा के तहत ही आयोजित इस कार्यक्रम के दौरान नौभास के कार्यकर्ता और दिशा के वॉलण्टियर लगातार मज़दूरों को यह बताते रहे कि निशुल्क चिकित्सा का अधिकार हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और इसे उन्हें लड़कर लेना ही होगा। सिर्फ दो दिन के मेडिकल कैम्प से स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का हल नहीं हो जाएगा बल्कि महज एक फ़ौरी राहत मिलेगी।

नौजवान भारत सभा *द्वारा आयोजित मेडिकल कैम्प का एक दृश्य*

नौजवान भारत सभा और बच्चा पार्टी ने संयुक्त रूप से नववर्ष की पूर्वसंध्या पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम किया और इस कार्यक्रम को 'नया वर्ष नये सपनों और नये संकल्पों के नाम' नाम दिया। इस कार्यक्रम ने नौभास और बच्चा पार्टी ने एक-एक नाटक और कुछ क्रान्तिकारी गीत प्रस्तुत किये। इस कार्यक्रम के दौरान वक्ताओं ने स्मृति संकल्प यात्रा का सन्देश वहाँ भारी संख्या में मौजूद लोगों तक पहुँचाया। बच्चों ने अपने गीतों के जरिये बड़े-बुज़ुर्गों को जाति और धर्म के भेदों से ऊपर उठने की सीख दी।

स्मृति संकल्प यात्रा के दौरान दिशा छात्र संगठन और

नौजवान भारत सभा ने दिल्ली को केन्द्र बनाकर हापुड़, ग़ाज़ियाबाद तक ट्रेनों में अभियान चलाया और भगतसिंह के विचारों को यात्रियों तक पहुँचाया और स्मृति संकल्प यात्रा के पर्चे वितरित किये। यात्रियों को यह जानकर काफी ताज्जुब हुआ कि आज के दौर में भी ऐसे नौजवान पाये जाते हैं जो भगतसिंह के सपनों को जीवित रखे हुए हैं और शहीदे-आज़म के विचारों को दूर-दूर तक पहुँचा रहे हैं। लोगों ने अभियान टोली का दिल से उत्साह बढ़ाया और सहयोग किया। ट्रेनों के अतिरिक्त दिशा और नौभास की संयुक्त टोलियों ने दिल्ली की स्थानीय बसों में भी व्यापक अभियान चलाया। इन अभियानों को विशेष रूप से भारी सहयोग प्राप्त हुआ। बस में सफ़र करने वाले मुसाफ़िरों ने टोली की बात को ध्यान से सुना और कई नौजवानों ने इस मुहिम से तत्काल जुड़ने की इच्छा प्रकट की। कई बसों के कण्डक्टर तो अभियान टोली को पहचान चुके थे और जब भी उसे देखते थे तो अपनी बस के यात्रियों को भगतसिंह का सन्देश देने के लिए बुलाते थे। इतना ही नहीं बस में आने पर वे यात्रियों से स्वयं अपील करते थे कि वे इस अभियान में सहयोग करें।

इसके अतिरिक्त, दिशा और नौभास की टीम ने हापुड़ में जीवन बीमा, जल निगम, विद्युत विभाग और नगर निगम के दफ्तरों में अभियान चलाया और कर्मचारियों को सरकार की मज़दूर विरोधी नीतियों की असलियत बताई। दिल्ली में एमटीएनएल और एनडीपीएल के दफ्तर में भी अभियान चलाया और कर्मचारियों ने युवाओं के इस प्रयास को दिल खोलकर सराहा और मदद की। अभियान टोली ने दिल्ली के तिमारपुर, रोहिणी, मॉरिस नगर, नॉर्थ कैम्पस के स्टाफ फ्लैटों, सादतपुर, भगतसिंह कॉलोनी, प्रेमनगर, मुकुन्द विहार, प्रकाश विहार इलाकों में व्यापक और घनीभूत जनसम्पर्क अभियान चलाया। इस दौरान इन जगहों के निवासियों ने इस प्रयास को सराहनीय बताया और टोली से नियमित तौर पर आने को कहा।

ये नुक्कड़ सभाएँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम, बस एवं ट्रेन अभियान, घर-घर जनसम्पर्क अभियान यह रपट लिखे जाने तक जारी थे।

आह्वान टीम, दिल्ली.

नाउम्मीदों की एक उम्मीद–क्रान्ति!

शहीदे-आज़म भगतसिंह और उनके साथियों के अधूरे सपनों की स्मृति जगाने और उन्हें पूरा करने के लिए एक नयी जनक्रान्ति का आह्वान करते हुए स्मृति-संकल्प यात्रा के अन्तर्गत गोरखपुर, इलाहाबाद और लखनऊ में लगातार विभिन्न प्रकार की जनकार्रवाइयाँ जारी हैं। उत्तर प्रदेश के इन प्रमुख महानगरों में दिशा छात्र संगठन और नौजवान भारत सभा के कार्यकर्ता संयुक्त टोलियाँ बनाकर औश्र अलग-अलग जनप्रचार की विविध कार्रवाइयों के जरिये छात्रों-युवाओं और मेहनतकश आबादी के बीच यह आह्वान कर रहे हैं–**'भगतसिंह की बात सुनो, नयी क्रान्ति की राह चुनो।'**

प्रभात फेरियों, नुक्कड़ सभाओं व **नुक्कड़ नाटकों** के जरिये, घर-घर घनीभूत जनसम्पर्क अभियान चलाकर **पोस्टर प्रदर्शनियों** और **विचार गोष्ठियों** का आयोजन करके इन शहरों के विभिन्न मुहल्लों, स्कूलों-कॉलेजों-दफ्तरों में छात्रों-युवाओं और व्यापक मेहनतकश आबादी के बीच स्मृति-संकल्प यात्रा का यह सन्देश पहुँचाया जा रहा है कि देशी-विदेशी पूँजी की बर्बर लूट से जनता की मुक्ति के लिए एक नयी जनक्रान्ति की तैयारी ही अब एकमात्र विकल्प है।

गोरखपुर और **इलाहाबाद** में यात्रा के अन्तर्गत यतीन्द्रनाथ दास के शहादत दिवस (13 सितम्बर) और शहीदे आज़म के जन्मदिवस (28 सितम्बर) के बीच एक पखवारे तक एक विशेष अभियान चलाया गया। महानगर गोरखपुर के सूर्यकुण्ड-सूर्यविहार, शाहपुर आवास-विकास, राप्तीनगर, हुमायूँपुर, बिलन्दपुर, कालेपुर, दाउदपुर आदि कॉलोनियों-मुहल्लों में **प्रभात फेरियाँ** निकाली गयीं व घनीभूत जनसम्पर्क कर पर्चा वितरण किया गया। गोरखपुर विश्वविद्यालय, दिग्विजय नाथ महाविद्यालय, सेण्ट एण्ड्रयूज महाविद्यालय और डीएवी महाविद्यालय के साथ ही शहर के कई इण्टर कॉलेजों में भी **नुक्कड़ सभाओं** व **पोस्टर प्रदर्शनियों** का आयोजन किया गया। भगतसिंह के विचारों पर आधारित पोस्टर प्रदर्शनी छात्रों-युवाओं की व्यापक आबादी के बीच भगतसिंह की वैचारिक विरासत को पहुँचाने में बेहद कारगर रही।

गोरखपुर विश्वविद्यालय में भगतसिंह के जन्मदिवस पर संवाद भवन में एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका विषय था–**'भगतसिंह की वैचारिक विरासत, आज का समय और हम'** जिसकी अध्यक्षता चर्चित कथाकार मदनमोहन ने की। गोष्ठी कक्ष छात्रों से खचाखच भरा था। इसमें वक्ताओं ने जेल में लिखे गए भगतसिंह के विभिन्न लेखों, पर्चों, पत्रों और अदालतों में दिये गये बयानों के हवाले से छात्रों-युवाओं को परिचित कराया और देशी सत्ताधारियों की उस साज़िश का भाण्डाफोड़ किया जिसके चलते वे भगतसिंह के विचारों को युवा पीढ़ी तक नहीं पहुँचने देना चाहते। देशी सत्ताधारी इस सच्चाई को बखूबी जानते हैं कि भगतसिंह के विचार उनकी हुकूमत के लिए भी उतने ही खतरनाक हैं जितने वे अंग्रेज़ी हुकूमत के लिए थे।

विचार गोष्ठी में वक्ताओं ने भूमण्डलीकरण के मौजूदा दौर में देशी पूँजीवाद द्वारा साम्राज्यवाद से साँठ-गाँठ की असलियत को बेनक़ाब करते हुए आगाह किया कि छात्रों-नौजवानों को चुनावबाज मदारियों का पिछलग्गू बनने से बचना होगा और उन्हें नये सिरे से गाँव-गाँव और शहर-शहर में तथा तमाम कॉलेजों-विश्वविद्यालयों में अपने क्रान्तिकारी संगठन बनाने होंगे।

इलाहाबाद में इस विशेष पखवारे के अन्तर्गत टैगोर टाउन, तेलियर गंज, जॉर्ज टाउन, कम्पनी बाग आदि मुहल्लों में प्रभात फेरियाँ निकाली गईं व घनीभूत जनसम्पर्क कर पर्चा वितरण किया गया। इसके साथ ही नगर निगम, ए.जी. ऑफिस, हाईकोर्ट आदि दफ्तरों में नुक्कड़ नाटक व सभाओं के जरिये नये जनमुक्ति संग्राम का सन्देश पहुँचाया गया। तरुण पीढ़ी के बीच भगतसिंह के विचारों को पहुँचाने के लिए सीएवी इण्टर कॉलेज, कर्नरगंज इण्टर कॉलेज, बिशप जॉनसन इण्टर कॉलेज, बाल भारती स्कूल और बीबीएस इण्टर कॉलेज सहित कई कॉलेजों में पोस्टर व साहित्य की प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया। इन प्रदर्शनियों के जरिये तरुणों ने आश्चर्य के साथ इस सच्चाई को जाना कि 23 वर्ष की छोटी सी उम्र में फाँसी का फन्दा चूमने वाला वह जाँबाज़ नौजवान कितना ओजस्वी, प्रखर और दूरदर्शी चिन्तक था।

दिशा छात्र संगठन व नौजवान भारत सभा की संयुक्त टोलियों ने ट्रेनों और बसों में मुसाफिरों के बीच प्रचार की अनूठी कार्यवाही चलाते हुए हज़ारों की संख्या में पर्चों का वितरण किया ताकि जड़ता व गतिरोध की मौजूदा स्थिति में क्रान्ति की स्पिरिट

ताज़ा की जा सके और इंसानियत की रूह में हरक़त पैदा की जा सके। गोरखपुर, वाराणसी, इलाहाबाद, लखनऊ, कानपुर आदि प्रमुख रेलवे स्टेशनों को केन्द्र बनाकर विभिन्न दिशाओं में जाने वाली ट्रेनों के जरिये विभिन्न दिशाओं में सुदूर अंचलों के मुसाफ़िरों के बीच स्मृति-संकल्प यात्रा का सन्देश पहुँचाये।

भगतसिंह के विचारों व सपनों के हरकारों की इन टोलियों की ऊर्जस्विता, गतिमानता और युवा-सुलभ ताज़गी और उत्साह को मुसाफिरों ने आश्चर्य-मिश्रित हर्ष के साथ स्वागत किया और भरपूर सहयोग दिया।

प्रस्तुति : 'आह्वान' टीम, गोरखपुर

भगतसिंह का ख़्वाब अधूरा, इसी सदी में होगा पूरा

नोएडा। नौजवान भारत सभा की ओर से स्मृति-संकल्प यात्रा के तहत शहीदे-आज़म भगतसिंह और उनके साथियों के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने तथा एक नये जनमुक्ति संघर्ष की तैयारी के लिए सांस्कृतिक अभियानों की शुरुआत की।

इस अभियान की शुरुआत मेरठ शहर से हुई, जहाँ 1857 में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की शुरुआत हुई थी। यहाँ पर प्रेमनगर, जैननगर तथा रेलवे स्टेशन के आस-पास के इलाकों में सघन रूप में स्मृति-संकल्प यात्रा का पर्चा वितरित करने के साथ कई जनसभाएँ भी आयोजित की गईं जिसमें क्रान्तिकारी गीत भी गाए गए।

वक्ताओं ने कहा कि भगतसिंह और उनके साथी व्यापक आम मेहनतकश आबादी के लिए आज़ादी चाहते थे न कि थैलीशाहों के लिए। उन्होंने कहा कि भगतसिंह ने उसी समय जनता को आगाह करते हुए कहा था कि कांग्रेस सिर्फ पूँजीपतियों की आज़ादी चाहती है। कांग्रेस की लड़ाई का अन्त साम्राज्यवाद के साथ एक समझौते के रूप में होगा।

नोएडा, ग़ाज़ियाबाद तथा दिल्ली के तमाम कार्यालयों में भी नौभास के कार्यकर्ताओं ने अभियान चलाया। नोएडा की झुग्गी बस्तियों में 'भगतसिंह की बात सुना, नई क्रान्ति की राह चुना!', 'भगतसिंह का ख़्वाब अधूरा, इसी सदी में होगा पूरा!' आदि नारे लगाते हुए जब नौजवानों की टीम ने प्रवेश किया तो मज़दूरों का उत्साह देखने लायक था। मज़दूरों ने क्रान्तिकारियों का साहित्य छापने के लिए न सिर्फ आर्थिक सहयोग किया बल्कि उनके बीच युवा टोली को अपने-अपने घर ले जाकर भोजन पानी कराने के लिए होड़-सी मच गई। नौजवान भारत सभा के कार्यकर्ताओं ने घर-घर जाकर मज़दूरों को हर तरह के ज़ोरो-जुल्म और पूँजीवादी शोषण के ख़िलाफ़ उठ खड़ा होने का आह्वान किया।

नोएडा तथा ग़ाज़ियाबाद के विभिन्न कॉलेजों में छात्रों के बीच भगतसिंह का साहित्य वितरित किया गया। संगठन के कार्यकर्ताओं ने छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा कि भगतसिंह ने छात्रों को सामाजिक बदलाव के लिए हमेशा मुख्य शक्ति माना था। उन्होंने छात्रों से कहा था कि 'विद्यार्थियों को क्रान्ति का सन्देश लेकर खेतों-खलिहानों तथा झुग्गी-बस्तियों में जाना होगा।'

छात्रों के बीच क्रान्तिकारी गीतों को काफी सराहा गया। युवा टोल की ओर से भगतसिंह के सपनों का साकार करने तथा एक नये क्रान्तिकारी बदलाव के लिए छात्रों को आगे आने का आह्वान किया गया।

विभिन्न दफ्तरों में पर्चा वितरित करने के साथ ही स्मृति-संकल्प यात्रा के कार्यकर्ताओं ने कर्मचारियों को बताया कि भगतसिंह मेहनतकशों की आज़ादी चाहते थे इसलिए उन्होंने ट्रेड डिस्प्यूट बिल का विरोध करते हुए असेम्बली में बम फेंका था। भगतसिंह और उनके साथियों ने साफ़ तौर पर कहा था कि वे 90 प्रतिशत मेहनतकशों की आज़ादी चाहते हैं।

कार्यकर्ताओं ने कर्मचारियों को आगाह करते हुए कहा कि नयी आर्थिक नीति लागू होने के बाद से हमारा देश देशी-विदेशी पूँजीपतियों के लिए खुला चारागाह बन गया है। श्रम कानूनों में सुधार के नाम पर जिन अधिकारों को कर्मचारियों-मज़दूरों ने लड़कर हासिल किया था उन्हें एक-एक करके छीना जा रहा है। लाल झण्डे वाली तमाम चुनावबाज़ पार्टियाँ भी अब खुले रूप में मज़दूरों के ख़िलाफ़ खड़ी हो गई हैं। इसलिए अब एक नये जनमुक्ति संघर्ष के अलावा मेहनतकश आबादी के पास दूसरा कोई विकल्प नहीं है।

आह्वान टीम, नोएडा

सड़क और साफ़ पानी के अधिकार के लिए नौजवान भारत सभा के नेतृत्व में जुझारू सड़क निर्माण आन्दोलन

नौजवान भारत सभा द्वारा दिल्ली के करावल नगर इलाके की मुकुन्द विहार कॉलोनी में सड़क निर्माण के लिए एक आन्दोलन चलाया गया। ज्ञात हो कि मुकुन्द विहार में कॉलोनी बनने के 25 वर्ष बाद भी न तो पक्की सड़क है, न साफ़ पीने का पानी है, न नालियाँ हैं। यानी, बुनियादी नागरिक सुविधाओं से भी वहाँ रहने वाली ग़रीब और निम्न मध्यम वर्गीय आबादी को वंचित करके रखा गया है। इसके ख़िलाफ़ लम्बे समय से जनता में रोष था। पहले कुछ व्यक्तिगत प्रयास सड़क बनवाने के लिए किए गए, लेकिन एकजुटता के अभाव में ये प्रयास असफल हो गए।

नौजवान भारत सभा ने हर नववर्ष की पूर्वसंध्या पर होने वाले अपने कार्यक्रम में पिछले वर्ष मुकुन्द विहार के निवासियों का यह आह्वान किया था कि वे वर्ष 2005 मानव जैसे जीवन का हक जीतने के लिए संघर्ष का वर्ष बनाएँ। और सितम्बर, 2005 में 'सड़क निर्माण आन्दोलन' शुरू हो गया। 20 अक्टूबर को स्थानीय निवासियों में सड़क के और नाली के अधिकार के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए नौभास के कार्यकर्ताओं ने पर्चा वितरण किया।

इसके बाद 21 अक्टूबर से घर-घर हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। इसमें करीब 1000 लोगों ने हस्ताक्षर किये। 22 अक्टूबर की शाम मुकुन्द विहार में एक व्यापक जनसभा आयोजित की गई जिसमें 200 लोगों ने हिस्सा लिया और आम सहमति से एक माँग-पत्रक तैयार किया गया। इसके बाद हस्ताक्षर अभियान के कागज और माँग पत्रक सहित मुकुन्द विहार का एक प्रतिनिधि मण्डल नौभास के कार्यकर्ताओं के नेतृत्व में क्षेत्र के विधायक भाजपा के मोहन सिंह बिष्ट से मिला। नतीजा वही था जो नेताओं से मिलने पर होता है। आश्वासन और निराशा! और नौभास के

कार्यकर्ता इस बात से अच्छी तरह वाकिफ़ थे। इसके बाद हस्ताक्षर अभियान की प्रतिलिपियाँ इलाके के निगम पार्षद, मुख्यमंत्री, दिल्ली, शहरी विकास मंत्री, दिल्ली, सांसद (पूर्वी दिल्ली), और उपराज्यपाल, दिल्ली और दिल्ली नगर निगम को दी गईं। 25 अक्टूबर को नौभास के नेतृत्व में मुकुन्द विहार के निवासियों का एक प्रतिनिधि मण्डल निगम पार्षद जगदीश प्रधान और सांसद सन्दीप दीक्षित से मिला। भारी जनदबाव से मजबूर होकर सन्दीप दीक्षित को यह वायदा करना पड़ा कि दीपावली के बाद सड़क निर्माण के काम की प्रक्रिया शुरू कर दी जाएगी। दीपावली के बाद नौभास का प्रतिनिधि मण्डल फिर से निगम पार्षद से मिला। इसके बाद यह बात इन "जनप्रतिनिधियों" के समझ में आ गई कि अब मुकुन्द विहार की जनता को बहुत समय तक बहका पाना मुश्किल है। नतीजतन, इस मुलाकात के बाद पखवारा बीतने से पहले ही सड़क निर्माण आन्दोलन को अपनी पहली ठोस विजय मिली, जब सड़क निर्माण की प्रक्रिया मापन और मूल्यांकन के साथ शुरू हो गई।

इसके बाद नौभास ने फिर एक जनसभा का आयोजन किया जिसमें लोगों को नौभास कार्यकर्ताओं ने यह याद दिलाया कि अभी संघर्ष खत्म नहीं हुआ बल्कि यह महज पहली जीत है। हमें यह संघर्ष तब तक चलाना होगा जब तक कि हम मुकुन्द विहार की सारी सड़कें नहीं बनवा लेते।

इसके बाद सड़क निर्माण के काम को एक वैकल्पिक सत्ता की निगरानी में करवाने के मकसद से नौभास के नेतृत्व में मुकुन्द विहार के दस लोगों की एक निगरानी कमेटी बनाई गई जो यह रिपोर्ट लिखे जाने तक नियमित तौर पर कार्य प्रगति का जायज़ा लेती रहती है। और यह निगरानी कमेटी कुछ टुच्चे छुटभैया नेताओं और लुटे-पिटे चौधरियों की तोड़-फोड़ की कोशिशों और हेकड़ी चलाने के प्रयासों को भी नाकाम करती रहती है और मुकुन्द विहार की जनता में इन लोगों के भय को समाप्त करने का काम भी करती है।

मेरठ में पुलिस के ऑपरेशन मजनूँ के ख़िलाफ़ दिशा छात्र संगठन का व्यापक हस्ताक्षर अभियान

ज्ञात हो कि मेरठ की पुलिस ने छेड़खानी रोकने के नाम पर गाँधी पार्क नामक एक सार्वजनिक स्थल पर बैठे लड़के-लड़कियों को बेइज़्ज़त करना और बुरी तरह मारना-पीटना शुरू कर दिया। इस घिनौनी हरकत से पूरे देश के युवाओं में गुस्से और नफ़रत की लहर दौड़ गयी। इस घटना में दोषी पुलिसकर्मियों को सज़ा दिलाने की माँग करते हुए और यह माँग करते हुए कि आगे से इस किस्म का कोई भी अभियान न चलाया जाय, दिशा छात्र संगठन ने दिल्ली विश्वविद्यालय में 20 से 23 दिसम्बर तक सघन हस्ताक्षर अभियान चलाया। इस हस्ताक्षर अभियान को छात्र-छात्राओं का शानदार समर्थन प्राप्त हुआ।

कई छात्रों ने यह भी कहा कि अगर मेरठ चलना पड़े तो वे चलने को भी तैयार हैं। तीन दिन तक हस्ताक्षर अभियान चलने के बाद करीब 1300 हस्ताक्षर जुटाकर हस्ताक्षर अभियान की प्रतिलिपियाँ मुख्यमंत्री (उ.प्र.), आई. जी. (मेरठ ज़ोन), डी.जी.पी. (मेरठ), राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, राष्ट्रीय महिला आयोग को प्रेषित कीं।

फ्रांस में सड़कों पर...

(पेज 32 से जारी)

हों, नस्लवादी, रंगभेदवादी भेदभाव और अपमान सहती है। 11 सितम्बर को वर्ल्ड ट्रेड सेण्टर पर हुए हमले के बाद इस आबादी की स्थितियाँ और बदतर हो गईं। पहले उन्हें रंगभेद और नस्लभेदवादी नज़रिये से देखा जाता था। अब वे उनकी नज़रों में आतंकवादी भी थे। हर अप्रवासी को आतंकवादी होने के शक में तरह-तरह की अपमानजनक जाँच-पड़तालों से होकर गुज़रना पड़ता है। ऐसी स्थितियों को झेलते युवा ज़्यादा दिन ख़ामोश नहीं रह सकते थे। उनके अन्दर जमा हो रहा आक्रोश जल्दी ही अपने लिए मार्ग तलाश लेता। दो किशोरों की बिजली घर दुर्घटना में हुई मौत ने उसे रास्ता दिया। बेरोज़गारी और अपमान, कह सकते हैं कि एक तो करेला और वह भी नीम चढ़ा। इसके विरोध में तीन सप्ताह तक चली आगजनी और तोड़-फोड़ अभी तो शुरुआत मात्र है।

फ्रांस पूँजीवादी विश्व के चमकते सितारों में से एक है। लेकिन इस पूँजीवादी स्वर्ग में हुई इस घटना ने सारे पर्दे गिरा दिये हैं। यह सच्चाई इसी पूँजीवादी स्वर्ग पर लागू नहीं होती बल्कि अन्य सभी पूँजीवादी स्वर्ग पर लागू होती है। आपको याद होगा कि 1992 में अमेरिका में एक अश्वेत युवक रोडनी किंग की पुलिस द्वारा बर्बर पिटाई के बाद भी अश्वेत युवकों का गुस्सा हिंसक वारदातों के रूप में फूट पड़ा था।

फ्रांस की पूँजीवादी सरकार पर ही नहीं बल्कि दुनिया भर की पूँजीवादी सत्ताओं पर ये तीन सप्ताह बहुत भारी गुज़रे हैं। दूसरों से चाहे कितना छिपायें लेकिन इस कुरूप सच्चाई से वे बहुत भली तरह वाकिफ़ हैं कि हर जगह इस तरह की आबादी है। और उनकी जीवन स्थितियाँ बद से बदतर हो रही हैं। फ्रांस के युवाओं की यह स्वतःस्फूर्त बग़ावत फ़िलहाल शान्त हो गई है। लेकिन यह दुनिया की अन्य जगहों के नौजवानों को, जो इस तरह की बेरोज़गारी, अभाव और अपमान झेल रहे हैं, उन्हें अपनी आवाज़ बुलन्द करने की प्रेरणा देगा। फ्रांसीसी हुक्मरानों की यह कोशिश रहेगी कि वे समाज में पड़ चुकी दरारों को और चौड़ा करते जाएँ। लेकिन उनकी ये कोशिशें हमेशा कामयाब होती रहेंगी, यह मानना इतिहास की गति को नज़रअन्दाज़ करना होगा। पूँजीवाद रूपी बुड्ढा जीने की ख़्वाहिश का इस कदर शिकार है कि जैसे तैसे नस्ल और धर्म, राष्ट्रीयता और भाषा, क्षेत्र और जाति के मतभेद जनता में सुलगा कर जिये जाने की कोशिश किये जा रहा है। लेकिन बूढ़ा चाहे जो भी यत्न करे मौत के करीब ही होता जाता है। शोषण, उत्पीड़न करने वाली यह व्यवस्था खोखली होती जा रही है। इस पर विद्रोह-रूपी दरारों की संख्या बढ़ती जा रही है।

मेहनतकश अवाम के संघर्षों के केन्द्र तो फिलहाल एशियाई, लातिन अमेरिकी और अफ्रीकी देश ही बनेंगे। लेकिन इनसे पश्चिमी देशों के मेहनतकश अछूते रहेंगे, इसकी कल्पना कर पाना मुश्किल है। फ्रांस की राजधानी पेरिस जहाँ मज़दूरों ने अपनी पहली सरकार बनाई थी, वहाँ मेहनतकश अवाम फिर से संघर्ष कर अपने द्वारा फहराये गये स्वतंत्रता-समानता-भ्रातृत्व के परचम को ऊँचा उठाएगा।